शिव सद्गुणों को जगाते है

देवाधिदेव महायोगी शिव के आराधक आध्यात्मिक गुरु जग्गी वासुदेव की दृष्टि में शिव तत्व क्या है? इसके बारे में पढ़ें इस साक्षात्कार में ।

आप शिव के आराधक हैं। शिव के बारे में आपकी दृष्टि क्या है?

योग की परम्परा में शिव की आराधना ईश्वर के रूप में नहीं, बल्कि गुरु के रूप में होती है। शिव का स्वरूप बहुआयामी है। असल में सद्गुणों का समुच्चय ही शिव है। जब हम शिव कहते हैं तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि वह अच्छा है अथवा अच्छा नहीं है। हमारी परंपरा में अच्छाई ही प्रतिष्ठित होती रहती है पर शिव को अच्छाई या बुराई की परिधि में समाहित नहीं किया जा सकता। अस्तित्व में दिखने वाली सभी चीजों में शिव का अंश है। परम्परा में शिव की व्याख्या इसी रूप में की गई है।

शिव के कई रूप हैं आप उन्हें कैसे देखते हैं?

सद्गुरु कहते हैं कि शिव के असंख्य रूप हैं। लेकिन मौलिकतौर पर हम उनके विविध रूपों की श्रेणियां बनाते हैं जिसमें वे कही शंभू तो कहीं भोले भंडारी, कहीं काल भैरव व महाकाल तो कहीं सोम के रूप में सुन्दर नजर आते हैं। विविध भंगिमाओं में हमारी आराधना के दौरान जब शिव अंतरआत्मा में प्रकट होते हैं तो मानो पूरी सृष्टि की नई संरचना उभरती है जो जितनी भूत और वर्तमान के लिए प्रासंगिक नजर आती है उतनी ही इसमें भविष्य का दर्शन छिपा होता है।

आपकी दृष्टि में शिव एक भावदशा है?

हां शिव एक जीवन दृष्टि है जिनकी विविध भंगिमाओं और मुद्राओं को आधार बनाकर जीवन जगत को सुव्यवस्थित तौर पर संचालित किया जा सकता है। सद्गुरु मानते हैं कि हमारा भौतिक शरीर जिन पंचमहाभूतों से बना है शिव उनके मूल में है। वही हमें संचालित करता है, प्रेरित करता है और एक हद तक हमारे दिमाग और विचार को भी प्रभावित करता है।

शिव का अर्थ कल्याणकारी भी होता है, फिर शिव को संहार का देवता क्यों माना गया है?

शिव शांति, समृद्धि और खुशियों के देवता हैं। खुशियों की तलाश करने वाले लोग चाहे जितने प्रकार के भौतिक व आध्यात्मिक जतन कर लें। आखिर शिव की शरण में आकर ही तनावों से मुक्ति मिलती है। कुछ पाने के लिए कुछ छोड़ना होता है। नया बनाने के लिए पुराने को तोड़ना और छोड़ना पड़ता है। इसलिए शिव नव-नव मंगल के निर्माता हैं। सुखद भविष्य की हसरत पालकर अनावश्यक संग्रह में जुटे हैं। जिस भविष्य को हम जानते नहीं उसके लिए बेचैनी क्यों। जब वर्तमान को जानबूझ कर बेचैन करेंगे तो सचमुच बेचैनी आएगी।

शांति और खुशी का अवसर कैसे मिले?

शांति, खुशी, उत्सव यह सब हमारे अंदर है। जब हम बाहर शांति का अनुभव करते हैं यह पहले हमारे अंदर घटित हो चुकी होती है। शांति का अंदर निर्धारण होने के बाद ही हम उसका बाहर प्रतिफल होता देख पाते हैं। इसी तरह खुशी और उत्सव का संचार जब अंदर होता रहता है तभी हमें पूरी दुनिया उल्लास और उमंग में डूबी दिखाई देती है। जीवन की खुशियां बाहर नहीं बल्कि अंदर हैं। हम खुद जीवन में खुश रहना सीख लें, तो आसपास हमें खुशनुमा जीवन-संसार नजर आएगा।

प्रस्तुतिः मनोज कुमारेन्द्र